http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 3, 15-18

Article ID:572

भारतीय कृषि में महिला सशक्तिकरण: एक नई दिशा

निखिल कुमार*

कृषि प्रसार शिक्षा विभाग, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर (813210)

*अनुरूपी लेखक

निखिल कुमार*

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ आज भी बड़ी आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। इस कृषि व्यवस्था की रीढ़ केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि महिलाएँ भी हैं, जो खेतों से लेकर पशुपालन, बीज संरक्षण, खाद्य प्रसंस्करण और विपणन तक हर स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फिर भी, लंबे समय तक महिलाओं के योगदान को न तो उचित पहचान मिली और न ही उन्हें पर्याप्त संसाधन या निर्णय लेने का अधिकार दिया गया। ऐसे में "महिला सशक्तिकरण" भारतीय कृषि के सतत विकास के लिए एक आवश्यक पहल बन गया है।

कृषि में महिलाओं की भूमिका

जब हम 'किसान' शब्द सुनते हैं तो अक्सर मानसिक छवि एक पुरुष की होती है, लेकिन आंकड़े इस धारणा को तोड़ते हैं। वर्तमान में, भारत की कृषि व्यवस्था में महिलाएँ 64% से अधिक श्रम बल का योगदान देती हैं । यह संख्या उन राज्यों में और भी अधिक हो जाती है जहाँ पुरुष प्रवासन आम है। बावजूद इसके, जमीन के मालिकाना हक की बात करें तो स्थिति बेहद चिंताजनक है। केवल 11% कृषि भूखंड ही महिलाओं के नाम पर हैं । इसी कारण महिलाएं अक्सर संस्थागत ऋण और सरकारी सब्सिडी से वंचित रह जाती हैं, क्योंकि बैंक भूमि को ही प्राथमिक गारंटी के तौर पर देखते हैं भारतीय कृषि में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत व्यापक है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ बुआई, निराई-गुड़ाई, कटाई, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, और घरेलू खाद्य प्रसंस्करण जैसे कार्यों में सक्रिय रहती हैं। विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के परिवारों में।

इसके बावजूद, अधिकांश महिलाएँ "अदृश्य श्रमिक" के रूप में काम करती हैं। उन्हें मजदूरी कम मिलती है, और कई बार तो उनके काम को "परिवार की जिम्मेदारी" मानकर आर्थिक मूल्य ही नहीं दिया जाता। यह स्थिति महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में बाधा उत्पन्न करती है।

महिला सशक्तिकरण का महत्व

महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को अधिकार देना ही नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और निर्णय लेने में सक्षम बनाना भी है। जब महिलाएँ सशक्त होती हैं, तो वे न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे समाज के विकास में योगदान देती हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी दर 2017-18 में 23.3% से बढ़कर 2023-24 में 41.7% हो गई है, जबकि बेरोजगारी दर 5.6% से घटकर 3.2% रह गई है। इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में महिला रोजगार में 96% की वृद्धि हुई है। आर्थिक दृष्टि से देखें तो लैंगिक अंतर को समाप्त करने से भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 27% की वृद्धि हो सकती है यदि महिलाओं की कार्यबल भागीदारी 2050 तक 55% तक नहीं पहुंची, तो देश को 5-6 ट्रिलियन डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद योगदान का नुकसान हो सकता है

कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण के कई सकारात्मक प्रभाव देखे गए हैं:

- **उत्पादन में वृद्धि:** महिलाएँ जब आधुनिक तकनीकों और संसाधनों तक पहुँच पाती हैं, तो कृषि उत्पादकता बढ़ती है।
- **पोषण सुधार:** महिलाएँ परिवार के पोषण पर अधिक ध्यान देती हैं, जिससे कुपोषण की समस्या कम होती है।
- **आर्थिक स्थिरता:** महिलाओं की आय बढ़ने से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

सशक्तिकरण में आने वाली चुनौतियाँ

हालांकि महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

1. **भूमि का स्वामित्व:** भारत में अधिकांश कृषि भूमि पुरुषों के नाम पर होती है। महिलाओं के पास भूमि का स्वामित्व बहुत कम होता है, जिससे वे ऋण, बीमा और सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं ले पातीं।
2. **घरेलू हिंसा:** शोध बताते हैं कि अंतरंग साथी हिंसा का सामना करने वाली महिलाएं सशक्तिकरण से सबसे अधिक वंचित रहती हैं। केवल शिक्षा और रोजगार पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है जब तक हिंसा के मुद्दे का समाधान न किया जाए।
3. **शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी:** ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम होता है, जिससे वे नई तकनीकों और जानकारी से वंचित रह जाती हैं।
4. **सामाजिक बंधन:** पारंपरिक सोच और पितृसत्तात्मक समाज महिलाओं की स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता को सीमित करता है।
5. **राजनीतिक अवरोध:** पंचायती राज में आरक्षण के बावजूद, पुरुष वर्चस्व और राजनीतिक हेरफेर भागीदारी घटाते हैं। जागरूकता अभियानों की कमी नीतियों के कार्यान्वयन में बाधा डालती है।
6. **वित्तीय संसाधनों की कमी:** बैंकिंग सेवाओं और ऋण सुविधाओं तक महिलाओं की पहुँच सीमित होती है। इन चुनौतियों से पार पाने के लिए सामाजिक परिवर्तन और सरकारी हस्तक्षेप जरूरी हैं।

सरकारी पहल और योजनाएँ

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों ने कई योजनाएँ शुरू की हैं:

- **महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना :** यह योजना महिलाओं को कृषि में आत्मनिर्भर बनाने और उनकी आय बढ़ाने पर केंद्रित है।
- **नमो ड्रोन दीदी :** यह योजना न सिर्फ महिलाओं को तकनीक से जोड़ती है, बल्कि उन्हें 'ड्रोन पायलट' बनाकर एक नया कदम दे रही है। महिला स्वयं सहायता समूह से अब ड्रोन की मदद से सटीक मात्रा में कीटनाशकों का छिड़काव कर रही हैं, जिससे लागत कम होती है और आय बढ़ती है
- **लखपति दीदी :** यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य है जिसमें ग्रामीण महिलाओं को सालाना 1 लाख रुपये से अधिक की आय अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। अब तक 3 करोड़ से अधिक महिलाएं इस उपलब्धि को हासिल कर चुकी हैं
- **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन :** इसके तहत स्वयं सहायता समूह बनाए जाते हैं, जिससे महिलाएँ आर्थिक रूप से मजबूत बनती हैं।
- **शी मार्ट्स :** सरकार ने हर जिले में समुदाय द्वारा संचालित खुदरा दुकानें स्थापित करने की योजना बनाई है, जो स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाए गए उत्पादों को सीधे बाजार में बेचने का मंच प्रदान करेंगी
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना:** महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण उपलब्ध कराया जाता है।
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना:** गरीब महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करती है।

इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार से जुड़ने के अवसर मिलते हैं।

स्वयं सहायता समूहों की भूमिका

स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये समूह महिलाओं को एक मंच प्रदान करते हैं, जहाँ वे बचत, ऋण और सामूहिक निर्णय के माध्यम से आर्थिक गतिविधियाँ संचालित कर सकती हैं।

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाएँ:

- छोटे व्यवसाय शुरू कर रही हैं
- कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर रही हैं
- स्थानीय बाजारों में अपनी पहचान बना रही हैं

इससे न केवल उनकी आय बढ़ी है, बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

तकनीकी सशक्तिकरण

आज के डिजिटल युग में तकनीक भी महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन बन रही है। मोबाइल फोन, इंटरनेट और कृषि ऐप्स के माध्यम से महिलाएँ:

- मौसम की जानकारी प्राप्त कर सकती हैं
- नई कृषि तकनीकों के बारे में सीख सकती हैं
- अपने उत्पादों को ऑनलाइन बेच सकती हैं

डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को तकनीक से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है।

सफलता की कहानियाँ

देश के कई हिस्सों में महिलाओं ने अपनी मेहनत और दृढ़ संकल्प से कृषि में नई पहचान बनाई है। चाहे वह जैविक खेती हो, डेयरी उद्योग, मधुमक्खी पालन या मशरूम उत्पादन—महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

उदाहरण के लिए, बिहार, महाराष्ट्र और केरल जैसे राज्यों में महिला किसानों ने समूह बनाकर न केवल अपनी आय बढ़ाई है, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा भी बनी हैं। इन सफलताओं से यह साबित होता है कि यदि सही अवसर और समर्थन मिले, तो महिलाएँ कृषि क्षेत्र में क्रांति ला सकती हैं।

चुनौतियां – केवल जमीन तक सीमित नहीं

हालांकि तस्वीर सुंदर दिख रही है, लेकिन जमीनी हकीकत कठोर है। एक अध्ययन से पता चलता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं समान काम के लिए 60% कम कमाती हैं। यह असमानता केवल वेतन की नहीं, बल्कि अवसरों की भी है। स्वयं सहायता समूह एक सशक्त माध्यम हैं, लेकिन यह 'रामबाण' नहीं हैं। अक्सर सबसे गरीब और वृद्ध महिलाएं स्वयं सहायता समूह के लाभ से वंचित रह जाती हैं क्योंकि वे ऋण चुकाने में असमर्थ होती हैं इसके अलावा, सामाजिक बंधन और जातिगत ढांचे अक्सर महिलाओं को बाजार तक पहुँचने या निर्णय लेने से रोकते हैं।

आगे की राह

महिला सशक्तिकरण को और मजबूत करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है:

1. **भूमि अधिकार सुनिश्चित करना:** महिलाओं के नाम पर भूमि का पंजीकरण बढ़ाना चाहिए।
2. **शिक्षा और प्रशिक्षण:** महिलाओं को कृषि से संबंधित प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
3. **वित्तीय समावेशन:** बैंकिंग और ऋण सुविधाओं तक महिलाओं की पहुँच आसान बनानी चाहिए।
4. **सामाजिक जागरूकता:** समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है।
5. **कौशल विकास:** फसल कटाई के बाद के कार्यों जैसे प्रोसेसिंग और पैकेजिंग में महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाए।
6. **तकनीकी पहुँच:** डिजिटल साक्षरता और तकनीकी संसाधनों को बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि में महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं, बल्कि आर्थिक और विकासात्मक आवश्यकता भी है। जब महिलाएँ

सशक्त होंगी, तो कृषि अधिक उत्पादक, टिकाऊ और समावेशी बनेगी। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम महिलाओं के योगदान को पहचानें, उन्हें समान अवसर दें और उनकी क्षमता को पूर्ण रूप से विकसित करने में सहयोग करें। एक सशक्त महिला न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे राष्ट्र को सशक्त बनाती है। महिला सशक्तिकरण केवल एक नारा नहीं है; यह भारत को खाद्य संकट और जलवायु परिवर्तन से बचाने का सबसे कारगर हथियार है। 2026 का 'अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष' सिर्फ एक उपलब्धि का जश्न नहीं, बल्कि उस नई सुबह की शुरुआत है, जहाँ खेत की मेड़ से लेकर संसद के केंद्र तक महिलाओं की आवाज़ गूंजेगी।

इसलिए, यदि हमें "नया भारत" बनाना है, तो हमें कृषि में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करना होगा और उन्हें सशक्त बनाकर विकास की मुख्यधारा में शामिल करना होगा।